ग्रामाभ्युदयादेव देशाभ्युदयः
गोविन्द बल्लभ पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय
कृषि मौसम विज्ञान विभाग, कृषि महाविद्यालय
पन्तनगर–263145 उधम सिंह नगर (उत्तराखण्ड)
फोन नम्बरः 05944–233032

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा बुलेटिन, जनपद – उधम सिंह नगर

उपमहानिदेशक (कृषि मौसम विज्ञान), भारत मौसम विज्ञान विभाग, पुणे **निदेशक, मौसम केन्द्र, देहरादून**

वर्षः 26 अंकः 79 बुलेटिन अवधिः 11–15 अक्टूबर, 2017 दिनः मंगलवार दिनाँकः 10 अक्टूबर, 2017

मौसम पूर्वानुमानः

भारत सरकार के **पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय** द्वारा वित्त पोषित एवं **भारत मौसम विज्ञान विभाग** द्वारा संचालित ग्रामीण कृषि मौसम सेवा परियोजना के अन्तर्गत **राष्ट्रीय मौसम पूर्वानुमान केन्द्र, भारत मौसम विज्ञान विभाग, मौसम भवन, नई दिल्ली** द्वारा पूर्वानुमानित तथा **मौसम केन्द्र, देहरादून** द्वारा संसोधित पूर्वानुमानित मध्यम अवधि मौसम आँकड़ों के आधार पर कृषि मौसम विज्ञान विभाग में स्थित कृषि मौसम विज्ञान प्रक्षेत्र इकाई (AMFU), गो0 ब0 पन्त कृषि एवं प्रौद्यो0 विश्वविद्यालय, पन्तनगर द्वारा **उधम सिंह नगर एवं नैनीताल जिलों के मैदानी क्षेत्रों में अगले पाँच दिनों** में निम्न मौसम रहने की संभावना व्यक्त की जाती है :–

पूर्वानुमानित मौसम तत्व	**मौसम पूर्वानुमान – उधम सिंह नगर**				
	11–10–2017	**12–10–2017**	**13–10–2017**	**14–10–2017**	**15–10–2017**
वर्षा (मिमी0)	0	0	0	0	0
अधिकतम तापमान (डिग्री से.ग्रे.)	34	34	33	33	32
न्यूनतम तापमान (डिग्री से.ग्रे.)	19	19	18	18	18
बादल आच्छादन	साफ	साफ	साफ	साफ	आंशिक बादल
अधिकतम सापेक्षित आर्द्रता (प्रतिशत)	85	85	85	85	85
न्यूनतम सापेक्षित आर्द्रता (प्रतिशत)	45	45	45	45	45
वायु की औसत गति (कि0मी0 प्रतिघंटा)	006	008	006	006	008
वायु की दिशा	पूर्व–उत्तर–पूर्व	पूर्व–दक्षिण–पूर्व	पूर्व–दक्षिण–पूर्व	पश्चिम–उत्तर–पश्चिम	पश्चिम–उत्तर–पश्चिम

गोविन्द बल्लभ पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विष्वविद्यालय, पन्तनगर स्थित कृषि मौसम विज्ञान वेधषाला (समुद्रतल से ऊँचाई–243.8 मीटर) के प्रेक्षणानुसार विगत सात दिनों (**03 से** 09 **अक्टूबर,** 2017 सुबह 8:30 तक) में आसमान में हल्के और घने बादल छाये रहे तथा 0.0 मि0मी0 वर्षा हुई, अधिकतम तापमान 32.5 से 34.2 डि0से0 एवं न्यूनतम तापमान 22. 5 से 24.5 डि0से0 के बीच रहा तथा वायु में सुबह 0712 बजे सापेक्षित आर्द्रता 69 से 91 प्रतिशत व दोपहर 1412 बजे सापेक्षित आर्द्रता 45 से 66 प्रतिशत एवं हवा 0.9 से 3.0 कि0मी0 प्रति घंटा की गति से मुख्यतः पश्चिम–उत्तर–पश्चिम दिशा से चली।

ऐसे अनुमानित मौसम में गो0ब0 पन्त कृषि एवं प्रौद्यो0 विश्वविद्यालय, पन्तनगर के वैज्ञानिकों द्वारा इस क्षेत्र के कृषक भाइयों को सलाह दी जाती है कि इस मौसम में विभिन्न फसलों के लिए खेतों में निम्नानुसार कार्यक्रम अपनायें।

कृषि मौसम परामर्श

फसल प्रबन्धः

❖ अगर खेत अक्टूबर के प्रथम सप्ताह के बाद खाली हो रहा हो तो अक्टूबर के प्रथम पखवाड़े में राई एवं पीली सरसों की बुवाई करें।

❖ राई की उन्नतशील प्रजातियों – वरूणा, रोहणी, कृश्णा, कान्ति, वरदान, वैभव, बसंती, नरेंद्र, अगेती राई–4, उर्वषी में से एक का चुनाव करें। पीली सरसों की उन्नतशील प्रजातियों –रागिनी, विनोय (बी–9), पंत पीली सरसों–1 में से एक का चुनाव करें।

❖ मक्का में जब भुट्टों के ऊपरी आवरण पीले पड़ने लगें तब भुट्टों की तुड़ाई करें। इसके उपरांत हरे पौधों को पषुओं हेतु चारे के रूप में प्रयोग करें।

❖ शरदकालीन गन्ने की बुवाई 15 अक्टूबर तक पूर्ण कर लें।

❖ धान की शीघ्र एवं मघ्यम अवधि वाली किस्मों में बालियों के सुनहरें रंग प्राप्त होने की अवस्था में कटाई करें। कटाई में विलम्ब होने पर फसल के गिरने व बालियों में दाना झड़ने का अंदेशा रहता है।

❖ धान की फसल की कटाई से 10–15 दिन पहले ही सिंचाई बंद कर दें। इससे कटाई के समय दानों में नमी की मात्रा करीब 20 प्रतिशत हो जाती है तथा करीब 10–15 से0मी0 सिंचाई की बचत होती है। और फसल 2–3 दिन पहले ही कटाई योग्य हो जाती है।

❖ धान की फसल में जीवाणु झुलसा रोग की रोकथाम के लिए स्ट्रेप्टोसाइक्लीन 15 ग्राम + कॉपर आक्सीक्लोराइड 500 ग्राम/हे0 की दर से छिड़काव करें।

❖ अगर गन्ना की बढ़वार अच्छी हो तो इस समय दो पंक्तियों के तीन थालों की एक साथ बंधाई कैची विधि से करें।

❖ दलहनी फसलों में पीला चित्तवर्ण रोग के प्रकोप में पत्तियाँ पीली पड़ने लगती है। यह रोग सफेद मक्खी द्वारा फैलता है। इसके नियंत्रण हेतु कीटनाशी डाइमिथोएट 30 ई0सी0 या मिथाइल–ओ–डिमेटान 25 ई0सी0 के 1 लीटर/हे0 की दर से 500–600 लीटर पानी में मिलाकर 2–3 छिड़काव 10–12 दिन के अंतराल पर करें।

❖ धान में तना बेधक का प्रकोप होने पर क्लोरान्ट्रानिलिप्रोले 20 एससी, 150 मि0ली0/हे0 या कारटाप 50 एसपी 1कि0ग्रा0/हे0 या फ्लूबेन्डियामाइड 480 एससी 75 मि0ली0/हे0 या मोनोक्रोटोफास 36 एसएल 1400 मि0 ली0/हे0 की दर से छिड़काव करें।

उद्यान प्रबन्धः

❖ यदि बैंगन का खेत बहुत ज्यादा नहीं है और तना बेधक कीट की समस्या है तो ग्रसित शाखा को ग्रसित भाग के एक इंच नीचे से तेज चाकू या ब्लेड से काटकर अलग कर दें। इसमें दवा डालने की आवश्यकता नहीं होती है और शाखाएं फिर से आ जाती है।

❖ टमाटर के लिए खेत की तैयारी करें तथा खेत की 2–3 बार जुताई करके समतल कर दें। टमाटर की फसल हेतु 120 कि0ग्रा0 नत्रजन , 80 कि0ग्रा0 फास्फोरस, 80 कि0ग्रा0 पोटाश उर्वरक की संस्तुति है।

❖ इस माह की दूसरे, तीसरे सप्ताह तक पछेती गोभी की रोपाई भी की जा सकती हैं। इसमें 150 कि0ग्रा0 नत्रजन, 80 कि0ग्रा0 फास्फोरस, 60 कि0ग्रा0 पोटाश उर्वरक की आवश्यकता है। जिसमें से आधी मात्रा नत्रजन व सम्पूर्ण फॉस्फोरस खेत की अंतिम जुताई के समय डालें व बची हुई नत्रजन को पौध रोपण के 30–35 दिन बाद व 60–65 दिन बाद करें। पौध रोपण की दूरी 60 से0मी0 कतार से कतार और 50 से0मी0 पौध से पौध रखें।

❖ जिन किसान भाईयों के खेत में गोभी के अगेती फसल के फल तैयार हो चुके हैं उन्हें काटकर बाजार भेजें तथा मध्यकालीन गोभी की पौध की रोपाई जो पिछले माह की है उसमें यूरिया की टॉप ड्रेसिंग करें। साथ ही निराई गुड़ाई एवं सिंचाई की व्यवस्था करें।

❖ यदि गोभी की फसल पर पत्ती चूसने वाले कीटों (माहूं एवं सफेद मक्खी) का प्रकोप हो तो इसके बचाव हेतु कीटनाशी दवा मैटासिस्टॉक्स 0.1 प्रतिशत अथवा एमिडाक्लोरपिड 0.1 प्रतिशत सांद्रता का घोल बनाकर छिड़काव करें। तथा घोल के साथ सैंडोविट या साबुन का चूरा अवश्य मिलाएँ।

❖ बैंगन में पत्ती धब्बा रोग के नियंत्रण हेतु मैन्कोजेब का 2 ग्राम/लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।

- अरबी की फसल में चूसनें वाले कीड़ों की रोकथाम हेतु एमिडाक्लोरपिड + डाईएथीन 45, 0.2 प्रतिशत घोल का छिड़काव दस दिन के अंतर से करें।
- दीमक का प्रकोप हाने पर इमिडाक्लोरपिड 1 मि0ली0/लीटर अथवा क्लोरोपाइरीफॉस 4 मि0ली0/लीटर के हिसाब से फलों के मुख्य तने के पास थाला बनाकर प्रयोग करें।
- बाग की जुताई तथा सफाई करवायें तथा खरपतवार का पूरी तरह नियंत्रण करें।
- नियमित फलन हेतु पैक्लोब्यूट्राजॉल का प्रयोग करें।
- वृक्ष में जाला होने की स्थिति में उसकी जाला यंत्र द्वारा सफाई करें तथा क्वीनौलफॉस 2 मि0ली0/लीटर के हिसाब से छिड़काव करें।

पशुपालन प्रबन्धः

- पशुओं के लिए हरे चारे में दलहनी चारा सर्वोत्तम आहार है जो पशुओं के जीवन यापन के साथ–साथ उत्पादन में भी सहायक होता है। अतः पशुपालकों से निवेदन है कि पशुओं को स्वस्थ रखने व अधिकाधिक उत्पादन प्राप्त करने हेतु सर्वोत्तम दलहनी चारा (बरसीम) अवश्य बोयें क्योंकि 5 कि0ग्रा0 बरसीम (हरा चारा), 1 किलो ग्राम सान्द्र आहार के बराबर होता है।
- इस महीने पशुओं खासकर भैंसों में प्रसव की दर बढ़ जाती है। अतः जो पशु ज्ञामन है उनको अन्य पशुओ से अलग कर थोड़ी मात्रा में कई बार अतिरिक्त पूरक आहार दें अन्यथा उन्हें आफरा (पेट फूलना) की समस्या हो सकती है।
- प्रसव के तुरन्त बाद नवजात बच्चे की साफ–सफाई कर उसकी नाभी को धागे से बांधकर किसी साफ चाकू या ब्लेड से काटकर उस पर जैन्सन वायलेट पेन्ट अथवा टिंचर आयोडीन लगाना चाहिए।
- प्रसव के 2 घंटे के भीतर नवजात की अच्छे से सफाई करने के उपरान्त उसको निश्चित रूप से थोड़ी मात्रा (1/2 – 1 कि0ग्रा0) खीस पिला दें।
- पशुओं को हरा चारा कम मात्रा में दें तथा हरे चारे में सूखा चारा मिलाकर दें।
- पीने का पानी स्वच्छ होना चाहिए तथा गन्दे पानी में परजीवी जनित व फफूदी जनित विषाणु की सम्भावना होती है।
- पशुओं का आवास सूखा होना चाहिए इसके लिए समय–समय पर चूने का छिड़काव करें।

डा0 आर0 के0 सिंह
प्राध्यापक एवं प्रिंसिपल नोडल अधिकारी
ग्रामीण कृषि मौसम सेवा,
गो.ब. पन्त कृषि एवं प्रौद्यो. विष्वविद्यालय, पन्तनगर